।। अर्हम् ।।

आचार्यश्री महाप्रज्ञ प्रवास व्यवस्था समिति, श्रीडूँगरगढ़ (बीकानेर)

दूरभाष : 01565–224600,224900

ई–मेल : jstsdgh01565@gmail.com

भगवान से दुख की जड़ को नष्ट करने की याचना करें – आचार्य महाप्रज्ञ

–अंकित सेठिया (मीडिया सहसंयोजक)–

श्रीडूँगरगढ़ 4 मार्च : आचार्य महाप्रज्ञ ने कल्याण मंदिर स्तोत्र पर प्रवचन करते हुए कहा कि धन, सत्ता और भौतिक सुख–सुविधाओं की प्राप्ति के लिए महापुरुषों, तपस्वियों और देवी–देवताओं के सम्मुख याचनाएं प्रस्तुत की जाती है। पर यह सब याचनाएं छोटी है, इन सबसे बड़ी याचना है दुःख की जड़ को ही नष्ट करने की भगवान पार्श्व से आचार्य सिद्धसेन ने दुःख के मूल बीज को ही नष्ट करने की याचना की थी। जो बीज समाप्त हो जाता है वह अंकुरित नहीं हो सकता। इसलिए भौतिक पदार्थों की याचना की अपेक्षा दुख के ही समाप्त करने की याचना करनी चाहिए। उन्होने कहा कि दया की याचना उसी व्यक्ति से की जाती है जिसमें सामर्थ्य होता है, जो शक्तिशाली होता है। धन से कोई नाथ नहीं बनता है, नाथ वही होता है जो रक्षा करने की शक्ति रखता है।

आचार्य महाप्रज्ञ ने कहा कि वर्तमान की दुनियां देखें तो पहला आश्वासन घर है। खुद के रहने, वस्तुओं को रखने, धूप छांव से बचने के लिए किसी आश्रय की, घर की जरुरत होती है। जिस गृहस्थ के घर नहीं होता है, वह गृहस्थ नहीं होता। जो अनगार होता है, सब संसार के संबधों को तोड़ चुका होता है और जिसके रसोई नहीं होती है वह साधु होता है। और जिसके ये तीनों होते हैं वह गृहस्थ होता है। इससे पूर्व युवाचार्य महाश्रमण ने गीता और उत्तराध्ययन पर तुलनात्मक प्रवचन करते हुए कहा कि श्रद्धा के साथ और भौतिक फल की आकांक्षा रहित होने वाली तपस्या सात्विक तपस्या है।

पूनर्जन्म अनुभूति शिविर आज से

आचार्य महाप्रज्ञ, युवाचार्य महाश्रमण के सान्निध्य में प्रवास व्यवस्था समिति के द्वारा लगने वाला प्रेक्षाध्यान से पूनर्जन्म अनुभूति शिविर आज से प्रारंभ होगा। 5 से 9 मार्च तक चलने वाले इस शिविर के निर्देशक मुनि किशनलाल ने बताया कि प्रेक्षाध्यान के विशेष प्रयोगों के द्वारा अपने अतीत को जानकर भविष्य को सुन्दर बना सकते हैं।

अंकित सेठिया
मीडिया संयोजक/सहसंयोजक